राजस्थान GK

- आदर्श कुमावत (राजस्थान क्लासेज)

छतरियों के नोट्स

राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु

FREE PDF DOWNLOAD LINK 👇

SSC GD

कांस्टेबल

2011, 2012, 2013, 2015, 2019

सम्पूर्ण सॉल्व्ड पेपर्स

परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न

राजस्थान GK

PDF DOWNLOAD

महत्वपूर्ण- महत्वपूर्ण प्रश्न

CET 2022

राजस्थान GK

परीक्षा संभावित प्रश्न

राजस्थान सामान्य ज्ञान

वन लाइनर प्रश्न-उत्तर

500+ क्लिक करें एवं पढ़ें

राजस्थान सामान्य ज्ञान

लाइव क्लास की सभी पीडीएफ

फ्री डाउनलोड करें

क्लिक करके डाउनलोड करें एवं पढ़ें

❐ उदयपुर संभाग की छतरियाँ-

❖ आहड़ की छतरियाँ/महासतियाँ- **आहड़ (उदयपुर)**

- यहाँ मेवाड़ के **महाराणाओं की छतरियाँ** बनी हैं, इनमें से **महाराणा अमरसिंह प्रथम** की छतरी सर्वाधिक पुरानी है।

❖ महाराणा उदयसिंह की छतरी- **गोगुन्दा (उदयपुर)**

- **महाराणा प्रताप की छतरी- बाण्डोली (चावंड, उदयपुर)**
  महाराणा प्रताप की **8 खम्भों की छतरी** चावंड के निकट बांडोली गाँव में केजड़ बांध **की पाल** पर बनी है। इसका निर्माण अमरसिंह प्रथम ने करवाया था।

❖ गफूर बाबा की मजार/छतरी- **उदयपुर**

- इसका निर्माण **शाहजहाँ** ने गफूर बाबा के सम्मान में जगमंदिर के समीप करवाया था।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ नटनी का चबूतरा- **पिछोला झील (उदयपुर)**

❖ संत रैदास की छतरी- **चित्तौड़गढ़**

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में बने **मीरां मंदिर के सामने** मीरां के गुरु रैदास की **4 खम्भों की छतरी** बनी है।

❖ जयमल राठौड़ की छतरी- **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के दौरान किले की रक्षा का भार **जयमल राठौड़** पर ही था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से इनकी **6 खम्भों की** छतरी बनी है।

❖ **जयमल राठौड़ की छतरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के दौरान किले की रक्षा का भार **जयमल राठौड़** पर ही था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से इनकी **6 खम्भों की** छतरी बनी है।

❖ **कल्ला राठौड़ की छतरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- लोकदेवता के रूप में पूजे जाने वाले कल्ला जी राठौड़ की छतरी भी चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से 4 खम्भों पर बनी है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **पत्ता सिसोदिया की छतरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार **रामपोल के अंदर** चित्तौड़ के तीसरे साके में **आमेट** (राजसमंद) के **फतेहसिंह सिसोदिया** को अकबर के विरूद्ध युद्ध में पागल हाथी ने सूंड में उठाकर पटक दिया था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी, यहीं पर **रामपोल के पास** ही इनकी छतरी बनी है।

❖ **शृंगार चंवरी- चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

मूलत: शांतिनाथ जैन मंदिर में 4 खंभो की छतरी बनी है, जिसे महाराणा कुम्भा की पुत्री के विवाह की चंवरी बनी है।

❖ रावत की 8 छतरियाँ- **बेगूं (चित्तौड़गढ़)**

- **उड़ना पृथ्वीराज की छतरी- कुंभलगढ दुर्ग (राजसमंद)**

महाराणा रायमल के पुत्र **कुंवर पृथ्वीराज** की 12 **खम्भों की छतरी** कुंभलगढ़ दुर्ग में बनी है, इस छतरी के वास्तुकार **धणषपना** है।

❖ चेटक की छतरी- **वलीचा गाँव (राजसमंद)**

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❑ **कोटा संभाग की छतरियाँ-**

❖ 84 खम्भों की छतरी- **देवपुरा गाँव (बूँदी)**

- इसका निर्माण राव **राजा अनिरूद्ध सिंह** के काल में राव देवा द्वारा 1683 ई. से 1695 ई. के मध्य करवाया गया था। यह छतरी तीन मंजिला बनी है मुख्यत: **शिव उपासना** के लिए निर्मित है। इस छतरी के अन्दर विभिन्न प्रकार के चित्र उकेरे गये हैं जिसमें मुख्य रूप से **पशु पक्षियों के चित्र** हैं। छतरी पर कामसूत्र ग्रन्थ आधारित चित्र भी बने है।

चित्र भी बने है।

❖ केसरबाग की छतरियाँ- **केसरबाग (बूँदी)**

- बूँदी से 4-5 किमी दूर केसरबाग में बूँदी के शासकों व राजपरिवार की **66 छतरियाँ** बनी हैं। जिनमें सबसे प्राचीन छतरी **राव दुदा** की तथा सबसे नवीन छतरी महाराव राजा **विष्णुसिंह** की है।
- **घास फूस की छतरी- बूँदी**

❖ क्षारबाग की छतरियाँ- **कोटा**

- यहाँ कोटा के **हाड़ा शासकों की छतरियाँ** हैं।

❖ संत पीपा की छतरी- **गागरोन (झालावाड़)**

- **थानेदार नाथुसिंह की छतरी- शाहबाद (बारां)**
  1932 ई. में डाकुओं से मुकाबला करते हुए शहीद हुये थे, इस छतरी का निर्माण **कोटा महाराव उम्मेदसिंह** ने करवाया था।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❐ **भरतपुर संभाग की छतरियाँ-**

❖ खाण्डेराव होल्कर की छतरी- **गागर सौली (भरतपुर)**

❖ अकबरी छतरी- **बयाना (भरतपुर)**

- बयाना दुर्ग के समीप बनी है। अकबर के शासनकाल में **गुजरात विजय के बाद** बनाई गई थी।

❖ 32 खम्भों की छतरी- **रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर)**

- इसका निर्माण **हम्मीर देव चौहान** ने अपने पिता जैत्रसिंह के 32 वर्षों के शासनकाल की स्मृति में धौलपुर के लाल पत्थरों से 32 खम्भों पर करवाया था। इसे **जैत्रसिंह की छतरी/न्याय की छतरी** भी कहते हैं। रणथम्भौर किले में बनी होने के कारण इसे **रणथम्भौर की छतरी** भी कहते हैं।

❖ **नटणी की छतरी**- **सवाईमाधोपुर**

❖ **कुत्ते की छतरी**- **रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर)**

रणथम्भौर अभयारण्य में **कुक्कुर घाटी** में स्थित है।

❖ **एक खम्भे की छतरी**- **सवाईमाधोपुर**

❖ **राव गोपालसिंह की छतरी**- **करौली**

❖ **बोहरा भगत की छतरी**- **करौली**

कैलादेवी मंदिर के पास बनी है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❑ जयपुर संभाग की छतरियाँ-

❖ **गैटोर की छतरियाँ**- **जयपुर**

- नाहरगढ़ दुर्ग की तलहटी में बना यह जयपुर के शासकों का निजी शमशान घाट है, जिसमें **महाराजा सवाई जयसिंह** से लेकर महाराजा **सवाई माधोसिंह द्वितीय** तक के राजाओं और उनके पुत्रों की स्मृति में बनी छतरियाँ है। इनमें सबसे कलात्मक छतरी **सवाई जयसिंह द्वितीय** की है, जिसकी एक अनुकृति लंदन के **केनसिंगल म्यूजियम** में भी रखी गयी है।

❖ **सवाई ईश्वरी सिंह की छतरी**- **जयनिवास उद्यान (जयपुर)**

सिटी पैलेस परिसर में जयनिवास उद्यान में **सवाई माधोसिंह** प्रथम ने सवाई ईश्वरी सिंह की स्मृति में यह बनवाई थी।

❖ **राजा मानसिंह प्रथम की छतरी**- **हाड़ीपुरा गाँव (आमेर)**

- आमेर के राजा **मानसिंह प्रथम** की छतरी है जो आमेर से 2 किमी दूरी पर स्थित हाड़ीपुरा में बनी है इस छतरी पर बने चित्र जहाँगीरकालीन हैं।

RAJASTHAN

CET 10+2

सम्पूर्ण कोर्स

RAJASTHAN CLASSES

YouTube Website

- AADARSH SIR

CET 10+2 Level

निशुल्क कोर्स

अब करें दमदार तैयारी

LIVE / PDF / NOTES

Free Online Platform

RAJASTHAN CET

सामान्य हिन्दी

Download Now

जहाँगीरकालीन है।

❖ **गुसाईंयों की छतरियाँ- मेड गाँव, विराटनगर (जयपुर)**

- यहाँ 16वीं व 18वीं शताब्दी की बनी 3 छतरियाँ है।

❖ **80 खम्भों की छतरी/मूसी महारानी की छतरी- अलवर**

- यह **अलवर दुर्ग** के पास बनी है इसका निर्माण महाराजा **विनयसिंह** ने 1815 ई. में **मूसी महारानी** (महाराजा बख्तावर सिंह की रानी) की स्मृति में करवाया था। यह **दो मंजिला छतरी** है जिसकी पहली मंजिल लाल पत्थर से व दूसरी मंजिल सफेद संगमरमर से बनी है। दूसरी मंजिल के भीतरी तरफ रामायण और महाभारत के भित्ति चित्र बने हैं। इसके पास '**सागरताल**' जलाशय बना है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **टहला की छतरियाँ- सरिस्का (अलवर)**

- सरिस्का अभयारण्य क्षेत्र में इन छतरियों पर **दशावतार का चित्रण** किया गया है जिन पर काले और कत्थई वानस्पतिक रंगो का प्रयोग किया गया है। इनमें मिश्रा जी की छतरी/8 खम्भों की छतरी प्रसिद्ध है।

❖ **नैड़ा की छतरी - अलवर**

❖ **फतेहगुम्बद छतरी- अलवर**

❖ **बन्जारों की छतरी- लालसोट (दौसा)**

- माना जाता है कि यहाँ **प्राचीन बौद्ध स्तूप** थे, जिनके स्तम्भ बंजारों की छतरियों में लगे हुए हैं।

- छठी शताब्दी में निर्मित है, इसे **6 खम्भों की छतरी** भी कहा जाता है।

❖ **जोगीदास की छतरी- उदयपुरवाटी (झुंझूनूं)**

- शेखावाटी शैली के प्राचीनतम भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है इसका चित्रकार **देवा नामक एक चित्रकार** था।

❖ **राव शेखा की छतरी- परशरामपुरा (झुंझुनूं)**

❖ **रामदत्त गोयनका की छतरी- डुन्डलोद (झुंझुनूं)**
1888 ई. में निर्मित है।

❖ **सेठ रामगोपाल पोद्दार की छतरी-रामगढ़ (सीकर)**

- यह शेखावाटी क्षेत्र की सबसे बड़ी छतरी है।
- **चाँदसिंह की छतरी**- गनेड़ी (सीकर)

❑ अजमेर संभाग की छतरियाँ

❖ दाहरसेन स्मारक- **अजमेर**

- नाग पहाड़ी के मध्य 1997 में अजमेर यूआईटी द्वारा सिंधुपति महाराजा दाहरसेन का स्मारक बनवाया गया है।

❖ आंतेड़ की छतरियाँ- **अजमेर**

- **दिगम्बर जैन सम्प्रदाय** की छतरियाँ हैं।

❖ अमरसिंह राठौड़ की छतरी- **नागौर**

- नागौर दुर्ग में **अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी** बनी है।

❖ लाछां गुजरी की छतरी- **नागौर**

❖ जय्यपा सिंधिया की छतरी- **ताऊसर (नागौर)**

❖ जगन्नाथ कछवाहा की छतरी- **मांडल (भीलवाड़ा)**

- आमेर के **जगन्नाथ कछवाहा** की समाधि पर राजनगर के सफेद संगमरमर से **32 खंभो की विशाल छतरी** बनी है जिसमें एक ही पत्थर से बना 5 फिट का शिवलिंग है यह छतरी हिन्दू और मुस्लिम स्थापत्य का अनूठा उदाहरण है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **अमरसिंह राठौड़ की छतरी**- **नागौर**

- नागौर दुर्ग में **अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी** बनी है।

❖ **लाछां गुजरी की छतरी**- **नागौर**

❖ **जय्यपा सिंधिया की छतरी**- **ताऊसर (नागौर)**

❖ **जगन्नाथ कछवाहा की छतरी**- **मांडल (भीलवाड़ा)**

- आमेर के **जगन्नाथ कछवाहा** की समाधि पर राजनगर के सफेद संगमरमर से **32 खंभो की विशाल छतरी** बनी है जिसमें एक ही पत्थर से बना 5 फिट का शिवलिंग है यह छतरी हिन्दू और मुस्लिम स्थापत्य का अनूठा उदाहरण है।

❖ **गंगाबाई की छतरी**- **गंगापुर (भीलवाड़ा)**

- महादजी सिंधियां की पत्नी गंगाबाई उदयपुर से आ रही थी तो गंगापुर में उनकी मृत्यु हो गयी थी, उन्हीं की स्मृति में यह छतरी बनी है। इसका निर्माण महादजी सिंधिया ने करवाया था।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **राणा सांगा की छतरी**- **मांडलगढ (भीलवाड़ा)**

- मेवाड़ के महाराणा सांगा की 8 खंभो की छतरी है। इसके निर्माता जगनेर (भरतपुर) के अशोक परमार हैं।

❖ **जोधसिंह की छतरी**- **बदनोर (भीलवाड़ा)**

- 32 खम्भों पर निर्मित है।

❖ **अमरगढ़ की छतरियाँ**- **बागोर (भीलवाड़ा)**

❖ **बदनौर की छतरियाँ**- **भीलवाड़ा**

❖ **रसिया की छतरी**- **टोंक**

☐ जोधपुर संभाग की छतरियाँ-

❖ **जसवंत थड़ा**- **जोधपुर**

- इसका निर्माण महाराजा सरदारसिंह ने अपने पिता जसवंतसिंह द्वितीय की स्मृति में 1906 में करवाया था।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **गोरा धाय-** मण्डोर के **मनोहर गोपी गहलोत** की धर्मपत्नी **गोरा टांक** ने अपने पुत्र का बलिदान कर, मेहतरनी का स्वांग कर मारवाड़ के **बाल महाराजा अजीतसिंह** को सन् 1679 ई. में दिल्ली के शाही पहरे से बचाया था। गोरा का जन्म 4 जून 1646 ई. को हुआ व स्वर्गवास 20 **मई** 1704 ई. को हुआ। इन्हें **'मारवाड़ की पन्नाधाय'** कहा जाता है।

❖ **जोधपुर के राजाओं के देवल- मंडोर (जोधपुर)**

मंडोर बाग में स्थित राजाओं के स्मारक देवल के नाम से प्रसिद्ध है, यहाँ पर **जसवंत सिंह द्वितीय** से पूर्व के शासकों की छतरियाँ बनी हैं। यहाँ सबसे बड़ी व सबसे सुन्दर छतरी **महाराजा अजीत सिंह** की है। मंडोर में राजाओं के अलावा भी कुछ छतरियाँ बनी हैं, जो मंडोर की छतरियाँ कहलाती हैं।

- मंडोर में ही पंचकुण्ड नामक स्थान पर **राव चूण्डा, राव रणमल, राव जोधा व राव गांगा** की छतरियाँ है। इनमें से सबसे **प्राचीन छतरी राव गांगा** की है।
- राव मालदेव के समय मारवाड़ के शासकों की छतरियाँ पंचकुण्ड की बजाय मंडोर में बनने लगी।
- इसी स्थान पर बनी अन्य छतरियों में निम्न प्रमुख हैं-

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **पंचकुंड की छतरियां- मंडोर (जोधपुर)**

- मंडोर के पास पंचकुंड नामक स्थान पर जोधपुर की रानियों की 49 छतरियाँ बनी है जिसमें **रानी सूर्य कंवरी की 32 खंभों की छतरी** सबसे बड़ी है। महाराजा मानसिंह की **भटियाणी रानी की छतरी** भी है।

❖ **ब्राह्मण देवता की छतरी**- मेहरानगढ़ दुर्ग के तांत्रिक अनुष्ठान में जिस ब्राह्मण ने आत्म बलिदान दिया, उसकी छतरी मंडोर के पंचकुड के निकट स्थित है।

❖ **कागा की छतरियाँ**- **जोधपुर** से 5 किमी दूर **ऋषि काग भुशुंडी** की तपोभूमि जहाँ ऋषि के तप से भगवती गंगा प्रकट हुई थी। कागा की छतरियों में जोधपुर नरेश **विजयसिंह** द्वारा निर्मित शीतला देवी का मंदिर है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ **प्रधानमंत्री की छतरी- जोधपुर**

- महाराजा जसवंत सिंह की प्राण रक्षा हेतु उनके प्रधानमंत्री **राजसिंह कुंपावत** ने आत्मबलिदान दिया था, उनकी स्मृति में कागा की छतरियों में यह छतरी बनवाई गई थी। लाल पत्थरों से बनी 18 खम्भों की छतरी है।

❖ **दीवान दीपचंद की छतरी- जोधपुर**

- यह छतरी कागा की छतरियों में **शीतला माता मंदिर** के पास बनी है।

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज

- विषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- 1000 प्रश्न ई-बुक Download
- राजस्थान GK ई- बुक डाउनलोड
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

❖ **मामा-भान्जा की छतरी-** ये धन्ना गहलोत और **भीयां चौहान** नामक वीरों की छतरी है, जो आपस में मामा-भान्जा थे। इन्होने जोधपुर नरेश अजीतसिंह के प्रधानमत्री एवं अपने स्वामी **मुकुंद चंपावत** की हत्या का बदला ठाकुर प्रतापसिंह उदावत से लेकर स्वामीभक्ति का परिचय दिया तथा अपना आत्मबलिदान दिया था। उनकी स्मृति में **महाराजा अजीतसिंह** ने इस **10 खम्भों की छतरी** का निर्माण मेहरानगढ़ दुर्ग में **लोहापोल के पास** करवाया था।

❖ **कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी-** **जोधपुर दुर्ग** के भीतर **जयपोल के पास** जसोल ठाकुर के प्रधान पुत्र कीरतसिंह सोढ़ा की छतरी का निर्माण **राजा मानसिंह** ने करवाया था। इसे **'करोड़ों के कीर्ति धणी की छतरी'** के नाम से भी जाना जाता है।

❖ **सेनापति की छतरी-** जोधपुर में नागौरी गेट के पास स्थित यह छतरी जोधपुर नरेश मानसिंह के **सेनापति इन्द्रराज** की है।

गोरा-धाय की छतरियाँ- जोधपुर के पुराने स्टेडियम के पास दो छतरियाँ बनी है जिनमें से एक 6 स्तम्भ की है व दूसरी 4 स्तम्भों की है

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ बख्तावर सिंह की छतरी- **मंडोर (जोधपुर)**

- अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह जयपुर के नरेश जगतसिंह के साथ जोधपुर के **शासक मानसिंह** से युद्ध करने गये थे, जहाँ पर वीरगति को प्राप्त हो गये थे, उन्हीं की याद में मंडोर में यह छतरी बनी है।

☛ **नोट**- बख्तावर सिंह की एक अन्य छतरी **अलवर** में भी है।

❖ 20 खम्भों की छतरी/सिंघवियों की छतरी- **जोधपुर**

- जोधपुर शासक भीमसिंह के **सेनापति अखैराज सिंघवी** की छतरी है।

❖ अहाड़ा हिंगोला की छतरी- **जोधपुर**

❖ जैसलमेर की रानी की छतरी- **जोधपुर**

❖ महामंदिर छतरी- **जोधपुर**

❖ आसकरण राठौड़ की छतरी- **सालवा (जोधपुर)**

- वीर दुर्गादास राठौड़ के पिता आसकरण की छतरी है।

❖ बड़ा बाग की छतरियाँ- **जैसलमेर**

- यहाँ जैसलमेर के **भाटी शासकों** की छतरियाँ हैं। यहीं पर **क्षेत्रपाल जी** का मंदिर भी बना है। **महारावल जैतसिंह** ने यहाँ 1528 ई. में जैतसर सरोवर तथा बड़ा बाग का निर्माण करवाया।
- **महारावल जैतसिंह की छतरी** भी यहीं बनी है जिसमें महारावल, सोढ़ी रानी, ऊँट तथा 10 पासवानों को हाथ जोड़े जमीन पर खड़े दिखाया गया है।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ पालीवालों की छतरी- **जैसलमेर**

❖ मूमल की मेढ़ी- **लोद्रवा (जैसलमेर)**

- काक नदी के किनारे स्थित है।

❖ राव चन्द्रसेन की छतरी- **सारण की पहाड़ियाँ (पाली)**

❖ महाराव मानसिंह की छतरी- **अचलगढ़ (सिरोही)**

❑ बीकानेर संभाग की छतरियाँ-

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ देवीकुंड सागर छतरियाँ- **बीकानेर**

- बीकानेर से 5 किमी दूर देवीकुंड सागर के पास बीकानेर के शासकों का निजी शमशान घाट है यहाँ राव जैतसिंह के समय से राजाओं, रानियों, पासवानों और उनकी संतानों की छतरियाँ बनी है। इनमें से **सबसे पुरानी** छतरी राव कल्याणमल की है जो जैसलमेरी पत्थर से बनी है।
- **रायसिंह** व **सूरसिंह** की छतरियाँ लाल पत्थर से बनी है।
- सबसे बड़ी और सुन्दर छतरियाँ राजा **करण सिंह** और **अनूपसिंह** की है। राव बीकाजी व महाराजा रायसिंह की छतरियाँ भी हैं।

❖ महाराजा गंगासिंह व सार्दुलसिंह की छतरियाँ- **बीकानेर**

❖ राव कल्याणमल की छतरी- **बीकानेर**

❖ तेस्सितोरी की छतरी- **बीकानेर**

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

❖ साधु गिरिधापति की छतरी- **कोलायत (बीकानेर)**

❖ राव जैतसी की छतरी- **हनुमानगढ़**

❐ अन्य छतरियाँ-

❖ **दुर्गादास की छतरी- रामपुरा (मध्यप्रदेश)**

❖ **पृथ्वीराज तृत्तीय की छतरी- गजनी (अफगानिस्तान)**

☛ **नोट**- मारवाड़ क्षेत्र में गौ रक्षार्थ बलिदान देने वाले वीर पुरूषों की समाधि स्थल को **गोवर्धन** कहते है। मारवाड़ क्षेत्र में गोवर्धन की काफी छतरियाँ बनी हैं क्योंकि इनमें कृष्ण गोवर्धन धारण किये बने होते हैं।

- यह समाधि स्थल भगवान कृष्ण के पर्यायवाची है क्योंकि भगवान कृष्ण भी गोपालक थे और इन **वीर पुरूषों** ने भी गौ रक्षा की।

Download More Pdf-
www.rajasthanclasses.in

भारत सामान्य ज्ञान

महत्वपूर्ण प्रश्नों की सभी पीडीएफ

फ्री डाउनलोड करें

क्लिक करके डाउनलोड करें एवं पढ़ें

सामान्य विज्ञान

महत्वपूर्ण प्रश्नों की सभी पीडीएफ

फ्री डाउनलोड करें

क्लिक करके डाउनलोड करें एवं पढ़ें

सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए
राजस्थान क्लासेज

- विषयवार ई- बुक यहाँ से देखे
- Youtube पर ऑनलाइन क्लासे देखे
- लेटेस्ट पोस्ट (GK क्विज)
- 1000 प्रश्न ई-बुक Download
- राजस्थान GK ई- बुक डाउनलोड
- Computer E- book Download
- Rajasthan Gk Questions
- India Gk Questions
- One Liner Gk Questions

RAJASTHAN

CET 10+2

सम्पूर्ण कोर्स

RAJASTHAN CLASSES

YouTube Website

- AADARSH SIR

CET 10+2 Level

निशुल्क कोर्स

अब करें दमदार तैयारी

LIVE / PDF / NOTES

Free Online Platform

RAJASTHAN CET

सामान्य हिन्दी

Download Now

सामान्य ज्ञान

5100+ प्रश्न

कम्प्यूटर ज्ञान

E-Book

~~149/~~ - Free Now

राजस्थान GK

LIVE CLASS PDF

DAILY UPDATE

सम्पूर्ण नोट्स PDF

विषयवार ई-बुक

सभी PDF यहां से डाउनलोड करें